ऊँचे ते ऊँचे ब्राह्मण कुल की हमे रखनी है लाज
(Poem on AM 9 July, 2017)

ऊँचे ते ऊँचे ब्राह्मण कुल की हमे रखनी है लाज,
कुल को कलंकित करने वाला नहीं करना है कोई काम,
ब्राह्मण बनने से बन गए हम स्वर्ग राज्य अधिकारी..

लोक लाज के पीछे हम अपना धर्म क्यों छोड़े,
अज्ञानियों को खुश करने अपनी धारणा क्यों छोड़े,
ब्रह्माकुमार कुमारी बनना सहज नहीं है बात,
ब्राह्मण कुल अब रोशन हो यही लगी हो तात..

बाबा मिला परिवार मिला, मिला है श्रेष्ठ सहारा,
धन्य – धन्य हो गए कितना श्रेष्ठ भाग्य हमारा,
ज्ञान की भावना शुभभावना का मिलता है हमे फल,
परमात्म मिलन से आज हमें मिल रहा है बल ...

होशियार बच्चों की होशियारी पर बाबा को तरस पड़ता है,
नामिग्रामी बनने को झूठे बहाने गढ़ंता है,
धर्म कर्म को छोड़ जो लोक लाज रहे निभाए,
होशियारी कर कर के निमित्त को रहे चलाए..

ये मत भूलो अपना बाबा है जानी जाननहार,
जन्म – जन्म का टाइटल और तुम खो रहे शृंगार,
सहयोग देकर सेवा में नामी ग्रामी बनते हो,
अन्दर एक बाहर दूसरा फिर क्यों करते रहते हो ...

होशियारी से चलाना फिर चिल्लाओगे,
एक का लाख गुना दंड जब तुम पाओगे,
बच्चों के कल्याण हेतु बाबा शिक्षा देते रहंगे,
बच्चे समझ कर जो करेंगे, अपने लिए ही करेंगे ..

ऊँचे ते ऊँचे ब्राह्मण कुल की हमे रखनी है लाज..
ऊँचे ते ऊँचे ब्राह्मण कुल की हमे रखनी है लाज...